

एक बाल या दांत से भी गिरफ्त में होंगे अपराधी

केजीएमयू में फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट की ओर से आयोजित वर्कशॉप में जुटे विशेषज्ञ

हर फ्राइम सीन बोलता है, पुलिस सुने तो सही

लखनऊ (ब्यूरो)। फ्राइम का घटनास्थल सिर्फ एक जगह नहीं होता है, अलबत्ता वहां मौजूद एक बाल या दांत तक गुनहगार को पकड़ना संभव है। शव की शिनाख्त भी घटनास्थल पर मिली छोटी सी चीज से हो सकती है, बशर्ते इन्हें एकरा करने और इन्वेस्टिगेशन में वैज्ञानिक तरीका अपनाया जाए। मंगलवार को केजीएमयू में आयोजित 'नेशनल फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी कान्फ्रेंस' डेंटल एजुकेशन प्रोग्राम एंड फोरेंसिक वर्कशॉप में विशेषज्ञों ने केस स्टडी की मदद से फोरेंसिक पड़ताल की बारीकियों को उजागर किया। बीबीएमयू में फोरेंसिक विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. नीतु मिश्रा ने बताया कि कैसे हर केस में बाल, दांत या दूसरे छोटे सुबूत महत्वपूर्ण हो गए।

टुकड़ों में शव मिला

केस 1 घटनास्थल से मिली जानकारी: भोपाल की इस घटना में एक तालाब में पैर मिले। सिर मिला लेकिन यह पूरी तरह गलत चुका था। चार दिन बाद दूसरी जगह एक बैग में हाथ और शरीर के दूसरे हिस्से मिले।

फोरेंसिक टीम की जांच: दांत और सिर के स्कैन की जांच में पाया गया कि मरने वाली लड़की थी, जो मेडिकल छात्रा थी। जिस बैग में अंग मिले, वह किसी फार्मा कंपनी का था। काटने के तरीके से भी किसी मेडिकल प्रैक्टिसनर की तरफ इशारा जा रहा था। सुबूतों की पड़ताल से पता चला कि मर्डर मेडिकल छात्रा के ही एक साथी ने किया था। शव ठिकाने लगाने के लिए उसके टुकड़े किए गए।

क्राइम कनेक्शन- दांत, स्कैन और बैग।

गोली लगने से युवक की मौत

केस 2 घटनास्थल से मिली जानकारी: एक युवक की गोली लगने से मौत हो गई। घटना को एक हफ्ता बताते की कोशिश की गई, जिसमें बाहर से गोली चलने पर युवक को गलती से गोली लग गई।

फोरेंसिक टीम की जांच: कमरे के हालात बता रहे थे कि वहां उसके अलावा भी लोग मौजूद थे। गोली लगने से त्वचा के टिश्यू जल गए थे, जो पास से गोली मारने पर ही संभव था। स्किन में भी मौजूद हेवी मेटल भी पास से गोली मारने जाने का सबूत दे रहे थे। घटनास्थल से मिले सबूतों से काटने और गिलास पर मौजूद होठों के निशान से अपराधियों को पकड़ा गया।

क्राइम कनेक्शन- गोली का निशान, सेब पर दांतों के निशान।

घटनास्थल की हर छोटी, बड़ी चीज सुबूत होती है। ऐसे में पुलिस और आमलोगों को भी फ्राइम सीन से दूर रहना चाहिए। ऐसा न हो कि मौके पर मिला अपराधी का बाल आपके कपड़ों के साथ ही चला जाए। खाए हुए बिक्रकुट का बाकी टुकड़ा से लेकर एक बाल, दांत का निशान अपराधी तक पहुंचा सकता है। पुलिस को भी फोटोग्राफी से लेकर सुबूत जुटाने तक में सावधानी बरतनी चाहिए।

— डॉ. नीतु मिश्रा, फोरेंसिक एक्सपर्ट, बीबीएमयू

अनिल कुमार सिंह

लखनऊ। हर फ्राइम सीन चीख-चीखकर बताता है कि वहां क्या हुआ, कैसे हुआ। गुनहगार कौन है। पर क्या पुलिस इसे देख-सुन पाती है। बात जब यूपी पुलिस की हो तो फोरेंसिक एक्सपर्ट का मानना है कि यहां इसीलिए कम आरोपियों को सजा हो पाती है, क्योंकि जांच के दौरान वैज्ञानिक पहलुओं को नजरअंदाज कर दिया जाता है।

पुलिस ही क्यों पोस्टमार्टम केस में भी लापरवाहियां होती हैं। मोहनलालगंज में दरिंदगी के बाद महिला की हत्या के मामले में भी तो यही हुआ था। इस केस में पोस्टमार्टम की वीडियोग्राफी के दौरान कैमरे का फोकस पोस्टमार्टम करने वालों पर था, या फिर महिला के चेहरे पर। ऐसी वीडियोग्राफी से क्या किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है? केजीएमयू में मंगलवार को 'नेशनल फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी कान्फ्रेंस' के पहले दिन एक्सपर्ट ने इन्वेस्टिगेशन के तमाम अहम पहलुओं पर फोकस किया। चूंकि पूरी विधा साइंटिफिक है लिहाजा हम आपको बता रहे हैं सब कुछ आसान शब्दों में। साथ ही फोकस करते हैं कि कहां और कैसे होती है इन्वेस्टिगेशन, पोस्टमार्टम में चूक जिससे अपराधी कानून के फंदे में आसानी से बच निकलते हैं।



केजीएमयू के ब्राउन हॉल में फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते डीजीपी और कार्यक्रम में मौजूद लोग।

दांत अहम साक्ष्य फिर भी किए जाते हैं नजरअंदाज

मृतक की पहचान में: एक्स के फोरेंसिक मेडिसिन के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. आदर्श कुमार कहते हैं कि दांत मौत के बाद भी बरसों तक सलामत रहते हैं। दो शक्स के दांत एक जैसे नहीं हो सकते। ऐसे में मरने वाला पुरुष था या स्त्री, उसकी उम्र क्या थी, उसकी रस यानी वह जापानी था या अमेरिकन, ये सब पता लगाया जा सकता है। बाँड़ी पूरी तरह से जल चुकी हो या कंकाल ही बचा हो तो भी दांत से मृतक की पहचान हो सकती है। दांत के पल्प में डीएनए सुरक्षित रहता है, जिससे उसके परिवार के सैम्पल से मिलान कर पहचान की जा सकती है। निचोरी कांड में 14 खोपड़ियों की पहचान दांतों से हुई थी।

मॉडस ऑपरेंडी का पता लगाने में: मान लीजिए किसी को मृत्यु पर तक्रिया रखकर मार दिया गया। ऊपरी तौर पर सब कुछ सामान्य दिख रहा हो, फिर भी दांतों से पता लगाया जा सकता है कि उसे किस तरीके से मारा गया। दरअसल ख़ाब के कारण होट और दांतों पर कुछ न कुछ अंतर जरूर आता है, भले ही वह हल्का क्यों न हो। नरो का ओवरडोज, जहर और एसिड पिला कर मारने के केसों में भी आसानी से दांत से पता लगाया जा सकता है। अफीम या इससे बनी दवाओं के ओवरडोज में दांत काले हो जाते हैं, सल्यूरिक एसिड पिलाकर मारा गया तो दांत ज्यादा ही सफेद नजर आते हैं, वहीं नाइट्रिक एसिड में पीले हो जाते हैं। लेड, आर्सेनिक या अन्य जहर के मामलों में भी दांत पर ऐसे ही अंतर देखने को मिलते हैं।

गुनहगार तक पहुंचाने में: डॉ. आदर्श कुमार के मुताबिक सुनंदा पुष्कर फोरेंसिक बाइटिंग (दांत से काटने का निशान) बेहद अहम साक्ष्य होता है। दांतों के निशान के मिलान और घाव में मौजूद लार के स्वाब में मिले डीएनए से मुजरिम तक पहुंचा जा सकता है।

सुबूत मिला जाता है, पुलिस खंगालती रहती है

एक्सपर्ट के मुताबिक डेड बाँड़ी पर बाइटिंग जाए जाने पर भी डेंटिस्ट को सैम्पल लेने के लिए नहीं बुलाया जाता है। पोस्टमार्टम के दौरान भी डेंटिस्ट को नहीं बुलाया जाता। डॉ. आदर्श कहते हैं कि पोस्टमार्टम करने वाले ज्यादातर डॉक्टर एमबीबीएस होते हैं। पर जब केस में बाइटिंग है तो उसका सैम्पल लेने के लिए ओडेंटोलॉजी के एक्सपर्ट को बुलाया जाना चाहिए। क्योंकि वह बेहतर तरीके से सैम्पल ले सकता है। यह नहीं होने से न केवल गुनहगार तक पहुंचने वाला, बल्कि उसको सजा दिला सकने वाला अहम साक्ष्य मिला जाता है। रैप के केसेज में भी जब पीडित का मेडिकल होता है तो बाइटिंग को नजरअंदाज किया जाता है जबकि इसके सैम्पल लिए जाएं तो गुनहगार का बच निकलना नामुमकिन हो जाए। यूपी के हालात पर वे कहते हैं यहाँ इसीलिए सबसे कम आरोपियों को सजा हो पाती है, क्योंकि इन वैज्ञानिक पहलुओं को नजरअंदाज कर दिया जाता है।



फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट का उद्घाटन लखनऊ (ब्यूरो)। केजीएमयू में मंगलवार को फोरेंसिक ओडेंटोलॉजी यूनिट का उद्घाटन कुलपति प्रो. रघिकांत ने ब्राउन हॉल में किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के किसी मेडिकल कॉलेज में ऐसी यूनिट नहीं है। यूनिट को रेफरल सेंटर के रूप में विकसित किए जाने की योजना है। इस मौके पर एडिशनल एडवोकेट जनरल गौरव भाटिया और पुलिस महानिदेशक एएल बनर्जी उपस्थित रहे।

फ्राइम सीन : इन्वेस्टिगेशन में कहां-कहां होती है चूक

एंट्री: वारदात स्थल को सील नहीं किया जाना
आम आदमी के अलावा मौका-ए-वारदात पर तहकीकात में जुटी पुलिस भी धड़कड़ घुसती है। न तो सूचू कवर होता है और न हाथों में दस्ताने। सिफस इंडिया फोरेंसिक लेब नई दिल्ली के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रंजीत सिंह कहते हैं कि साक्ष्य जुटाने समझ हाथों में ग्लव्स और सू कवर नहीं होने से फिगर और फुट प्रिंट नष्ट होते हैं।

फोटोग्राफी: गैर प्रोफेशनल फोटोग्राफर से फोरेंसिक वर्क
मौका-ए-वारदात की फोटोग्राफी अपने आप में एक विधा है। डॉ. रंजीत के मुताबिक फ्राइम सीन को दर्शाने के लिए यह उपयोगी हो सकते हैं। पर प्रोफेशनल नहीं होने से फोटोग्राफर अहम साक्ष्य को नजरअंदाज कर जाता है। फोटोग्राफी अगर सीन को समझता है तो कुछ चीजें साबित करने के लिए दूसरी वैज्ञानिक प्रक्रियाएं अपनाई जानी चाहिए। फोटो की एक बड़ी खामी और होती है कि इससे रियल डिस्टेंस मसलन बाँड़ी और दीवार तो दिख रही है पर उनमें कितनी दूरी है इसका पता नहीं लगता। फोटो वालिटी खराब हो सकती है। कई बार तो हत्या में प्रयुक्त चाकू की फोटो ऐसी होती है कि केस डायरी में बताई गई लंबाई से कम दिखती है। फोटो में लंबाई प्रदर्शित हो जाए तो ऐसे सवाल न उठें। चाकू के बराबर में कुछ नहीं तो करंसी रखकर फोटो खींच ली जाए। हर नोट की निश्चित लंबाई होती है ऐसी फोटो से केस डायरी मजबूत होगी।

स्केचिंग: फोरी तरीके से स्केच तैयार कर दिया जाना
फोटो और वीडियो से दूरी के साथ कौन सी चीज किस दिशा में है यह पता लगाना मुश्किल होता है। लिहाजा सभी फ्राइम सीन को एक साथ दर्शाने वाली स्केच भी तैयार करानी चाहिए। मसलन शव, हथियार, बिखरा खून इन सबकी सही पोजीशन क्या थी, जो चीजें किस दिशा में हो उन्हें कम्पास की मदद से टीक कर उसी दिशा में और दूरी को माप कर सही-सही दर्शाया जाए।

पैकेजिंग: नमूनों को जुटाने के बाद सही पैकेजिंग नहीं
एक्सपर्ट के मुताबिक घटनास्थल से उठाने गए साक्ष्यों की पैकेजिंग सही से नहीं की गई तो तैब तक पहुंचते-पहुंचते उनके नष्ट होने का खतरा बना रहता है।

सीखना होगा फ्राइम सीन को सुरक्षित करना

स्टेट फोरेंसिक लेब की डिप्टी डायरेक्टर डॉ. अर्चना त्रिपाठी ने कहा कि फ्राइम सीन से लार, खून या दूसरे सुबूत जुटाने के लिए सही तरीका अपनाया जाना चाहिए। कहीं से रूई लेकर उसे लकड़ी में लपेटकर लार लेना सुबूत मिटा सकता है। खून का पैटर्न तक हत्या में उपयोग किए हथियार के बारे में बता सकता है। मोहनलालगंज दरिंदगी मामले में उनका कहना था कि पुलिस को फ्राइम सीन सुरक्षित करने व सुबूत लेना सीखना होगा।

दरो-दीवार भी बताते हैं वारदात कैसे हुई

बीबीएमयू में फोरेंसिक साइंस की लेक्चरर डॉ. नीतु मिश्रा कहती हैं कि बर्निंग वाले केसेज में साक्ष्य जुटाने में लापरवाहियां होती हैं। जबकि दीवारों पर लिपके धुएँ के अंश से पता लगाया जा सकता है कि उसे केरोसिन डालकर मारा गया या पेट्रोल।

बुखार के मरीज बढ़े, वार्ड में भर्ती बंद

अस्पतालों की इमरजेंसी फुल, ओपीडी में भीड़

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। सरकारी अस्पताल संक्रामक रोग से पीड़ित मरीजों से फुल हो गए हैं। लोहिया, सिविल और बलरामपुर अस्पताल की इमरजेंसी पूरी तरह फुल रही। ओपीडी में भी मरीजों की भारी भीड़ रही। बेड न खाली होने से गंभीर रोगियों को भर्ती करने में भी मुश्किलें आ रही हैं। अस्पतालों में गंभीर रोगियों को भर्ती करने के लिए पहले से भर्ती मरीजों को मजबूरी में समय से पहले ओपीडी में रेगुलर दिखाने की बात कहकर डिस्चार्ज किया जा रहा है।



लोहिया अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड मरीजों से भर गए हैं।

मंगलवार को लोहिया अस्पताल से डिस्चार्ज हुए भगवान लाल (40) ने बताया कि उनको पेट संबंधी समस्या के बाद भर्ती कराया गया था। डॉक्टर ने कुछ जरूरी दवाएँ लिखकर डिस्चार्ज कर दिया। अस्पताल के सीएमएस डॉ. आरसी अग्रवाल ने बताया कि गंभीर रोगियों की भर्ती की जा रही है। यही हाल सिविल और बलरामपुर अस्पताल का है जहाँ इमरजेंसी

यूनिट कई दिनों से फुल चल रही है। सिविल अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आशुतोष दुबे ने बताया कि इमरजेंसी को खाली रखने के लिए 20 से अधिक रोगियों को वार्ड में शिफ्ट किया जा रहा है और उतने ही मरीज डिस्चार्ज किए जा रहे हैं। बलरामपुर अस्पताल के निदेशक डॉ. यूनन राय ने बताया कि इमरजेंसी में सौ से अधिक मरीज भर्ती किए जा रहे हैं।

साफ-सफाई बचाएगी जान
सिविल अस्पताल के इएमओ डॉ. अनिल कुमार बताते हैं कि बारिश के बाद इमरूमजा नामक वायरस शरीर की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाता है। इससे लोग बुखार और दूसरे संक्रामक रोगों की चपेट में आ जाते हैं। इससे बचने के लिए साफ-सफाई जरूरी है। बांसी और बाहर का खाना खाने से बचना चाहिए।

एनआईसीयू में भी जगह नहीं नवजातों का इलाज मुश्किल

लोहिया, डफरिन और झलकारीबाई अस्पताल फुल

बेड की कमी के चलते बच्चों को केजीएमयू किया जा रहा है

क्या कहते हैं अधिकारी

डफरिन अस्पताल के एसएनसीयू के इंचार्ज डॉ. सलमान खान बताते हैं कि अस्पताल में जन्म लेने वाले बच्चों की भर्ती प्रमुखता से होती है। इसके बाद सीएचसी और बीएससी में जन्म लेने वाले नवजातों को भर्ती किया जाता है। प्राइवेट अस्पताल में जन्म लेने वाले बच्चों को क्रिटिकल कैरेज में भर्ती किया जाता है। लोहिया अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एमएल भागवत बताते हैं कि आठ बेड की यूनिट अधिकतर समय फुल रहती है। इमरजेंसी ट्रैटमेंट के लिए बच्चों को शिफ्ट करना पड़ता है। बेड के संकट के चलते केजीएमयू भेजना मजबूरी है।

इसके बाद वो नवजात को लेकर केजीएमयू पहुंचे जहाँ उसे दोपहर करीब दो बजे भर्ती किया गया।

हज हाउस में बढ़तजामी बरकरार

गलत सूचना से दो हज यात्रियों की फ्लाइट छूटी

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। हज हाउस पहुंच रहे हज यात्रियों को राज्य हज कमिटी की बढ़तजामी का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। मंगलवार को दो हज यात्रियों की फ्लाइट इसलिए छूट गई, क्योंकि वे राज्य हज कमिटी के बताए फ्लाइट के समय हज हाउस पहुंचे। उन्हें अगली उड़ान के लिए फ्लाइट यात्रा खर्च 17050 रुपये फिर से जमा करके अगली तिथि सुनिश्चित कराने की चेतावनी दी गई। सुल्तानपुर के बुजुर्ग रमजान अली को मंगलवार को फ्लाइट संख्या एसवी 5215 से मदीना रवाना होना था लेकिन उन्हें रात व सुबह फोन पर जानकारी मिली कि मंगलवार को दूसरी उड़ान से मदीना रवाना होना है। जिससे रमजान अली अपने परिवारियों के साथ दोपहर में पासपोर्ट व टिकट लेने हज हाउस पहुंचे लेकिन यहाँ उन्हें बताया गया कि उनकी उड़ान संख्या 5215 ला चुकी है।



कानपुर रोड स्थित हज हाउस के बाहर हज यात्रियों का जारी रहा आना जाना।

रमजान अली के सहयोगी मुजफ्फर हुसैन ने बताया कि सुबह 11 बजे राज्य हज कमिटी के कार्यालय पर फोन नंबर 052265911 पर फोन किया लेकिन उन्हें शाम की उड़ान के बारे में ही बताया गया। इस पर हज कमिटी ऑफ इंडिया के कर्मचारियों ने कहा कि हज पर जाना है तो 17050 रुपये तब अगली फ्लाइट तिथि तय की जाएगी। इसी तरह मंगलवार की पहली उड़ान से जाने वाले बस्ती के कवर नंबर यूपीएफ 23-905-2 के मुराद अली और फातिमा को भी 12.20 की उड़ान से मदीना रवाना होना था,

लेकिन उन्हें भी सही जानकारी नहीं मिलने से वे रिपोर्टिंग नहीं कर सके और उड़ान छूट गई। अब अगली तिथि के लिए यह भी हज हाउस में ही डटे हैं। लेकिन देर रात तक उनकी भी उड़ान की व्यवस्था नहीं की जा सकी।

₹17050 जमा करने पर मिलेगी अगली उड़ान तिथि

हज यात्रियों को बराबर सूचना दी जा रही है, एसएमएस के जरिये फ्लाइट की तिथि और रिपोर्टिंग की जानकारी पहुंच रही है। अब इसके बावजूद किसी के पास सूचना नहीं पहुंच रही तो इसमें हज यात्री की गलती है।
— डॉ. सुल्तान अहमद, सचिव राज्य हज कमिटी

पहली फ्लाइट से 350 की जगह 348 ही हुए रवाना

लखनऊ। दो हज यात्री मदीना के लिए पहली उड़ान से रवाना नहीं हुए लेकिन राज्य हज कमिटी ने अपने जारी बुलेटिन में सभी हज यात्रियों को रवाना कर दिया। राज्य हज कमिटी से मंगलवार को 348 हज यात्री मदीना रवाना हुए लेकिन सचिव डॉ. सुल्तान अहमद की बुलेटिन में 350 हज यात्रियों की रवानगी की सूचना जारी की गई। उनके मुताबिक राजधानी से मंगलवार को सात सौ हज यात्री मदीना रवाना हो गए।

न्यूज डायरी

आठ तक चलेगा नेत्रदान अभियान

लखनऊ। इंदिरा गांधी आई हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की ओर से शुरू किया गया नेत्रदान अभियान आठ सितंबर तक चलेगा। कौर्निया एंड रिफ्रैक्शन सर्जरी की विभागाध्यक्ष डॉ. अंजुम मजहारी ने बताया कि अब तक कुल 31 लोगों ने नेत्रदान करने की इच्छा जताई है।

किशोर के तराने गाते सुनाई देंगे नवेद

लखनऊ। उप संगीत नाटक अकादमी अध्यक्ष नवेद सिद्दीकी का खुद का गाया किशोर कुमार कलेवरान जल्द ही सामने होगा। अकादमी के अध्यक्ष नवेद सिद्दीकी ने मंगलवार को बताया कि इसमें उन्होंने किशोर कुमार के गाए 10 गानों को आवाज दी है।

Medical Helpline

Dr. Ravi Singh (M.D. Homeopathy)
डा. रवि मल्ही स्पेशियलिटी होम्योपैथिक क्लीनिक
मरुतिपुरम, लेखराज के सामने, फंजाबाद रोड, लखनऊ
फोन: 9935898134, 0522-4042243

विशेष इलाज : माइग्रेन, सायटिका, थयरी, बाल झरना, एनेमोसिस, एरिथ्रोडा, मसू, मुंहासे, सोरियासिस व अन्य चर्म रोगों का उचित इलाज।
समय: प्रातः 10 से 1 बजे, सायं 6 से 9 बजे।
सोमवार, गुरुवार व रविवार सुबह
www.ravclinic.com
हमारे परिणाम देखें फिर आरंभ करें

SANJEVANI AROGYA SANKALP
(Ayurvedic Panchakarma & Detox Clinic)
Phone: 0522 2993220, Mob: 9415073857, 8604607556
Relax, Revive and Rejuvenate
Specializes in: All Kinds of arthritis, cervical and lumbar spondylitis, migraine, sinusitis, piles, digestive disorders, asthma, gynaecological disorders, pre and post delivery care.
Medicines specially brought from kerala and all the panchakarma procedures done.
Time: 10.00am to 2.00 pm, 5.00pm to 8.00 pm. | Visit us at www.ayurvedatex.com
Vineet Plaza, Behind Jaipuria School, Vineet Khand 6, Gomti Nagar, Lucknow

विना लार्गे विना बतारो
शराव घुड़ाने का उचित इलाज
स्मैक, गोली, भांग, गांजा, चरस, अफीम, इन्जेक्शन, तबाकू, आदि सभी प्रकार के नशे से घुटकारा पाने का उचित इलाज।
दुबले पतले रूबी/पुरुष/युवक/युवतियों
ज्यादा खानें, पचा कर 1 साह में आश्चर्य जनक परिणाम प्राप्त
प्राणाचार्य आयुर्वेदिक क्लीनिक
पानी की टंकी के बगल में लालकुआँ, लखनऊ
मो. 8418000008, 9628064666

हेयर ट्रान्सप्लान्ट
गंजनेप से घुटकारा, अपने ही प्राकृतिक बालों द्वारा
PIONEER IN U.P.
डॉ. के.पी. चन्द्रा
M.B.B.S., M.D. (Gen Medicine) Consultant Physician & Diabetologist
मूल्यपूर्व सोनियर रेजिडेंट एम्ब, नर्स
दायाँ हाथ तथा बल्ले प्रेशर संबंधित सभी बीमारियों का प्रमाणिक इलाज
समय: प्रातः 10 बजे से 1 बजे, सायं 6 बजे से 9 बजे तक
2/880, विनय खण्ड, हुसरिया चौराहा, शिवगंज स्टेडियो के पास, गोमती नगर लखनऊ
मो.: 780 0992222, 860 480 4125 | E-mail: drpkchandra@gmail.com

Before After
Hair Transplant
1000+ Transplants प्राकृतिक रूप से बढ़ाएँ
Dr. M.M. Gupta
MS, MCh (KGMC, LKO), DNB
Liposuction • LASER Hair Removal
Tummy Tuck • Breast Surgery
Nose Surgery • BOTOX
www.gangnanhaingraffing.com
9721476547
9795224033
8400746979
2/4, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow

अमर उजाला मेडिकल हेल्पलाइन में विज्ञापन/उपस्थिति हेतु सम्पर्क करें: +91-9675890435